राष्ट्रपर्व

राष्ट्रपर्व हो देश की जय जयकार हो
आजादी में मस्तानी सेना की हुँकार हो ।
देश की रग–रग में गर्म रक्त संचार हो ।
गाँव–गली में बच्चों की पुकार हो ।।
इस अवसर पर राष्ट्रपर्व पर, हम कुछ ना बोलें तो धिक्कार है ।
चुपचाप चलें, गर्दन को झुकाये, हम मुख ना खोलें तो धिक्कार है ।।

ये आजादी ये संविधान नहीं भीख मिला ।
कहीं रक्त बहा, कहीं जेल हुई, कहीं हुजूम चला ।
एक दिन नहीं, एक रात नहीं, एक साल नहीं
कई वर्षों के संघर्षों से ये गुल है खिला ।
शहीदों की शहादत पर बात हो और हम कुछ ना बोलें, तो धिक्कार है ।
विधि निर्माताओं की कहीं बात चले और हम मुख ना खोलें, तो धिक्कार है ।।

जो शहीद हुए उनके भी घर बार थे ।
चाहने वाले एक नहीं उनके हजार थे ।
कोई बेटा, बेटी, बहु, दादा, नाना थे कोई
रिश्ते–नाते उनके भी थे, परिवार थे ।।
सब छोड़–छाड़ वो कूद पड़े थे प्राण लुटाने, और हम कुछ ना बोलें तो धिक्कार है ।
ये राष्ट्रपर्व रखा है उनकी याद दिलाने, और हम मुख ना खोलें तो धिक्कार है ।।

ये संविधान जो भले–बुरे का भान कराये ।
सबको समता का समरसता का पाठ पढ़ाये ।
ये नहीं करता पंथ की न ही धरम की बातें ।
हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख–इसाई को ये साथ मिलाए ।।
आज स्मरण हो इस संविधान का और हम कुछ ना बोलें तो धिक्कार है ।
आज प्रण हो विधि विधान का और हम मुख ना खोलें तो धिक्कार है ।।

निज अधिकारों का, निज कर्तव्यों का ज्ञान हो ।
राष्ट्र संस्कृति का निज भाषा का अभिमान हो ।।
आधुनिकता की राह चलें पर आदर्शों का मान हो ।
कल पुर्जों की इस दुनियां में मानव का निर्माण हो ।।
हम याद रखें, हम ना भूलें, खुलकर बोलें, तो जय जयकार हो ।
हम साथ मिलें, सब साथ बढ़ें, संग–संग बोलें तो जय जयकार हो ।।

सुन्दर नौटियाल 'शिक्षक' (17.01.2017)